भगत नामदेव - सबद १४
मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
रागु धनासरी, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ६९३

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥
जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥
जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥
जिउ कोकिल कउ अम्मबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥
चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥
जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥
बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥
मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥
साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥
सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥

सार: हमारा अंतर्मन शांति, स्पष्टता और पूर्णता के लिए तरसता है क्योंकि यह अवस्थाएँ हमारे सबसे सच्चे स्वरूप से मेल खाती हैं। ध्यान भटकाने वाली चीज़ों के कोलाहल के नीचे, हमारे जीवन में संतुलन, सार्थकता और गहराई को पुनः स्थापित करने की एक गहरी चाह छिपी होती है। जिस प्रकार पृथ्वी जीवन को बनाए रखने के लिए वर्षा से पोषण प्राप्त करती है, उसी तरह हमें भी अपने कल्याण के लिए आध्यात्मिक पोषण की आवश्यकता होती है जो कि ज्ञान, ईमानदारी और शांति के साथ अपने अंतर से जुड़ने से प्राप्त होता है। जब जागरूकता हृदय को प्रिय होती है तब जीवन खंडित रूप में या बेचैनी के साथ नहीं जिया जाता। उस निर्णायक क्षण में, हमारा अंतर्मन सृष्टि की एकात्मता की वास्तविकता के साथ हो जाता है और भीतर सामंजस्य बनाए रखता है।

मारवाड़ि जैसे नीरु बालहा बेलि बालहा करहला ॥

जैसे मारवाड़ के रेगिस्तान के लिए पानी ज़रूरी है, वैसे ही ऊँट के लिए लताएँ ज़रूरी हैं। यह लाक्षणिक रूप से अंतरात्मा की आध्यात्मिक पोषण के लिए गहरी चाहत को दर्शाता है।

जिउ कुरंक निसि नादु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥१॥
जैसे रात में संगीत की मनमोहक धुन हिरण को मोहती है, वैसे ही मेरे मन में सर्वव्यापी चेतना समाई हुई है। लोककथाओं का यह संदर्भ हमारी अंतरात्मा के आध्यात्मिक सामंजस्य की ओर स्वाभाविक आकर्षण को दर्शाता है।

तेरा नामु रूड़ो रूपु रूड़ो अति रंग रूड़ो मेरो रामईआ ॥१॥ रहाउ ॥
तुम्हारा सार सुंदर है, तुम्हारा स्वरूप सुंदर है, तुम्हारी विविध अभिव्यक्तियाँ सुंदर हैं, हे मेरी सर्वव्यापी सत्ता। यह हमारे अस्तित्व के असीम चमत्कार के प्रति गहन सराहना को प्रकट करता है। (१)(विराम)

जिउ धरणी कउ इंद्रु बालहा कुसम बासु जैसे भवरला ॥
जैसे धरती वर्षा का स्वागत करती है, वैसे ही भँवरा फूल की महक की ओर खिंचता है। यह अंतरात्मा के ज्ञान की खोज का प्रतीक है, जिससे वह आध्यात्मिकता की ओर आकर्षित होती है।

जिउ कोकिल कउ अम्मबु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥२॥
जैसे कोयल को आम का पेड़ प्रिय होता है, वैसे ही मेरे मन को वह सर्वव्यापी चेतना प्रिय है। यह दर्शाता है कि जब हमारी अंतरात्मा को सर्वव्यापी ज्ञान से पोषण मिलता है तब वह पवित्रता में कैसे विकसित होती है।

चकवी कउ जैसे सूरु बालहा मान सरोवर हंसुला ॥
जैसे चकवी पक्षी को सूर्य प्रिय होता है, वैसे ही हंस के लिए मानसरोवर झील अनमोल होती है। यह हमारी अंतरात्मा की विचारों की स्पष्टता और पवित्रता के लिए गहरी चाहत को सुंदरता से दर्शाता है।

जिउ तरुणी कउ कंतु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥३॥
जैसे किसी जीवनसाथी को अपना साथी प्रिय होता है, वैसे ही मेरे मन को वह सर्वव्यापी ज्ञान प्रिय है। यह अंतरात्मा की अपने वास्तविक स्वरूप के साथ गहरे जुड़ाव की खोज को दर्शाता है। (३)

बारिक कउ जैसे खीरु बालहा चात्रिक मुख जैसे जलधरा ॥
जिस तरह बच्चे को दूध प्रिय होता है, वैसे ही चातक, वर्षा-पक्षी बारिश की बूंदों के स्वाद में आनंदित होता है। यह उजागर करता है कि सर्वव्यापी स्रोत के साथ हमारा जुड़ाव केवल भक्तिपूर्ण ही नहीं है, यह ऐसा बंधन है जो हमारे विकास और कल्याण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मनि रामईआ ॥४॥
जैसे मछली के लिए पानी जीवन-आधार है, वैसे ही मेरे मन के लिए सर्वव्यापी ऊर्जा आवश्यक है। यह दर्शाता है कि हमारी अंतरात्मा केवल सद्गुणों की उपस्थिति में ही विकसित होती है। (४)

साधिक सिध सगल मुनि चाहहि बिरले काहू डीठुला ॥
साधक, सिद्ध और सभी ऋषि-मुनि इसकी कामना करते हैं परंतु इसे वास्तव में प्राप्त करने वाले कुछ ही होते हैं। यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि सत्य की खोज सार्वभौमिक है, इसकी अनुभूति केवल उन्हीं को होती है जो सत्यनिष्ठा और एकात्मता को अपने जीवन में धारण करते हैं।

सगल भवण तेरो नामु बालहा तिउ नामे मनि बीठुला ॥५॥३॥
जैसे संपूर्ण सृष्टि तुम्हारे ही सार-तत्व को संजोकर रखती है, वैसे ही नामदेव कहते हैं कि वह नाम उनके मन को भी अत्यंत प्रिय है। यह पुष्टि करता है कि जो शक्ति बाहरी संसार को धारण किए हुए है, वही शक्ति अंतरात्मा को भी भीतर की ओर आकर्षित करती है। (५)(३)

तत्त्व: भक्त नामदेव कहते हैं कि वह अदृश्य और सर्वव्यापी सत्ता जो इस संसार को धारण करती है, वही सत्ता है जिसे जाग्रत मन सबसे अधिक संजोकर रखता है। जिस तरह रेगिस्तान के लिए जल और मछली के लिए पानी अनिवार्य है और मधुमक्खी के लिए सुगंध अत्यंत आवश्यक है, उसी

प्रकार हमारे आध्यात्मिक कल्याण के लिए जागरूकता भी अनिवार्य है, यह कोई वैकल्पिक विषय नहीं है। अतः, हमारी अंतरात्मा स्वाभाविक रूप से उसी ओर खिंची चली जाती है जो उसे पोषण प्रदान करता है। सत्य की खोज का यह आकर्षण प्रेम जितना ही गहन, प्यास जितना ही सहज-स्वाभाविक और एक शिशु की दूध की लालसा जितना ही कोमल होता है। जबकि अनेक लोग इस जागरूकता की खोज करते हैं किंतु कुछ ही ऐसे होते हैं जो एकत्व को पहचानते हुए, अपने अंतर्मन से उस परम-सत्ता का मिलन स्वीकार करते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com